डॉ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 27/4/20

विषय - संस्कृत, एम० ए०
प्रथम सेमेस्टर, व्याकरण

महाभाष्य - पस्पशाह्निक

शब्द की परिभाषा :-

'शब्द्यते इति शब्दः'

'शब्द' धातु से घञ् प्रत्यय होकर 'शब्द' रूप निष्पन्न हुआ है। 'शब्द' ही एक ऐसा तत्त्व जो समस्त जगत को एकात्मकता के सूत्र में बांधे हुए है। महाभाष्यकार पतञ्जलि ने शब्द का अनुशासन ही व्याकरण का विषय कहा है। उनके अनुसार शब्द और अर्थ में अभेद रूप व्यवहृत होता है। जैसे - 'अथ गौरित्यत्र कः शब्दः?' यहाँ गौ के शब्द-निर्णय के प्रसंग में यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि 'गौः' इस ज्ञान में शब्द किसे कहा जाए? प्रश्नकर्ता का अभिप्राय यह है कि 'अयं गौः' यह गौ है - इस प्रत्यक्ष ज्ञान के विषय व्यक्ति, गुण, क्रिया, और स्वयं गौ (जाति) ये चारों होते हैं। इन चारों में शब्द किसे कहा जाए? प्रश्न का उपपादन करनेवाला 'गौ' ज्ञान में विषय रूप से आने वाले व्यक्ति आदि का क्रमशः निर्देश करता हुआ पुनः प्रश्न करता है - 'किं यत्तत्-सास्नालाङ्गूल ककुद खुर विषाण्यर्थ रूपं स शब्दः' अर्थात जो गलकम्बल, पूंछ, ककुद, खुर, और सींग से युक्त जो पदार्थ अर्थात पशु व्यक्ति है, क्या वही शब्द है? इस पर सिद्धान्ती कहता

है - 'नेत्याह । द्रव्यं नाम तत्' । शब्द नहीं वह तो द्रव्य है। इस पर प्रश्न करने वाला पुनः पूछता है कि यदि गलकम्बलादिमान् पदार्थ शब्द न होकर द्रव्य है तो 'तदिङ्गितं चेष्टितं निमिषितमिति स शब्दः' अर्थात् उस शक्ति का अपने शरीर-व्यापार द्वारा अभिप्रायों का संकेत करना, चलना-फिरना, आँखों का व्यापार आदि शब्द है? इस पर सिद्धान्ती कहता है - 'नेत्याह । क्रिया नाम सा'। नहीं, वह तो क्रिया व्यापार है। इस पर प्रश्नकर्ता पुनः प्रश्न करता है कि यदि उस गौ व्यक्ति के अभिप्राय संकेतादि क्रिया व्यापार है, तब उस गौ व्यक्ति का जो शुक्लत्व, नीलत्व, कृष्णत्व, कपिलत्व और कपोतत्व आदि वर्ण है, क्या वह शब्द है? 'यत्तर्हि तच्छुक्लो नीलः कपिलः कपोत इति स शब्दः?' इस पर सिद्धान्ती कहता है - 'नेत्याह । गुणो नाम सः'। गौ व्यक्ति के शुक्लत्व नीलत्व आदि शब्द नहीं है, क्योंकि वह श्रोत्र से इतर चक्षु इन्द्रिय से वेद्य है अतः वह शब्द न होकर गुण रूप ही है। इस पर प्रश्नकर्त्ता पुनः पूछता है कि उस गौ व्यक्ति के नील शुक्लादि शब्द न होकर गुण है - 'यत्तर्हि तद्भिन्नेष्वभिन्नं छिन्नेष्वछिन्नं सामान्यभूतं, स शब्दः' - अर्थात् उस गौ व्यक्ति का सभी गौवों में सदा रहने वाला एकमात्र गोत्व, जो कि अलग-अलग गौ व्यक्तियों में सामान्य रूप से देखा जाता है, तथा छिन्न भिन्न होने पर भी स्वयं

अच्छिन्न रहता है, वह सामान्य ही शब्द है? इस पर सिद्धान्ती कहता है- नहीं, वह तो आकृति है- 'नेत्याह। आकृतिर्नामि सा'। तो फिर शब्द किसे कहा जाए? 'येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुद खुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति स शब्दः' अर्थात् जिसके उच्चारित किये जाने पर गलकम्बल, पूंछ, ककुद, खुर और सींग वाले पशु व्यक्ति का ज्ञान होता है, वही 'शब्द' है। सिद्धान्ती द्वितीय समाधान प्रस्तुत करते हुए कहता है- 'अथवा प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः शब्द इत्युच्यते। तद्यथा शब्दं कुरु, मा शब्दं कार्षीः, शब्दकार्यं माणवक इति ध्वनिं कुर्वन्नेवमुच्यते। तस्मात् ध्वनिः शब्दः'। जैसा कि ध्वनि करते हुए लड़के को उद्देश करके कहा जाता है- शब्द करो, शब्द मत करो, यह लड़का बार-बार शब्द को करने वाला है। अतः वर्णोच्चारण रूप ध्वनि ही 'शब्द' है।

Scanned with CamScanner